संवाद दर्शन

विक्रम संवत : 2083 | वर्ष : 2026

हिन्दी पाक्षिक

अंक : मई (द्वितीय)

पुरुषोत्तम मास

खेती की बदलती तस्वीर और किसानों की नई उम्मीद

भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहाँ की बड़ी आबादी आज भी खेती पर निर्भर है। समय के साथ कृषि के सामने अनेक चुनौतियाँ उभरकर आई हैंकृबढ़ती लागत, घटते जल संसाधन, मिट्टी की उर्वरता में कमी, श्रमिकों की उपलब्धता तथा जलवायु परिवर्तन का प्रभाव। इन चुनौतियों के बीच कृषि वैज्ञानिकों ने कई ऐसी तकनीकों का विकास किया है जो खेती को अधिक लाभकारी और टिकाऊ बना सकती हैं। इन्हीं में से एक महत्वपूर्ण तकनीक है जीरो टिलेज (मतव ज्पससंहम), जिसे आधुनिक कृषि की एक क्रांतिकारी पहल माना जा रहा है।

जीरो टिलेज का सरल अर्थ हैकृबिना जुताई किए फसल की बुवाई करना। परंपरागत खेती में किसान फसल कटने के बाद खेत की कई बार जुताई करते हैं, पाटा चलाते हैं और फिर बीज बोते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में समय, श्रम और धन का अधिक व्यय होता है। इसके विपरीत जीरो टिलेज में विशेष मशीन की सहायता से खेत को बिना जोते सीधे बीज और उर्वरक डाल दिए जाते हैं। इससे खेती की लागत कम होती है और समय की बचत होती है।

बदलते कृषि परिदृश्य में आवश्यकता

आज किसानों के सामने सबसे बड़ी समस्या खेती की बढ़ती लागत है। डीजल, उर्वरक, मजदूरी और सिंचाई पर होने वाला खर्च लगातार बढ़ रहा है। दूसरी ओर फसलों का मूल्य कई बार अपेक्षित लाभ नहीं दे पाता। ऐसे में किसानों को ऐसी तकनीक की आवश्यकता है जो कम लागत में बेहतर उत्पादन दे सके।

धान की कटाई के बाद गेहूं की बुवाई में अक्सर देरी हो जाती है। यदि गेहूं समय पर नहीं बोया जाए तो उसकी उपज प्रभावित होती है। जीरोटिलेज इस समस्या का प्रभावी समाधान प्रस्तुत करती है। धान कटने के तुरंत बाद बिना जुताई के गेहूं की बुवाई की जा सकती है, जिससे फसल को पर्याप्त समय मिलता है और उत्पादन में वृद्धि होती है।

समय और धन दोनों की बचत

जीरो टिलेज का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इससे खेत तैयार करने की आवश्यकता लगभग समाप्त हो जाती है। किसान को बार–बार ट्रैक्टर चलाने की जरूरत नहीं पड़ती। इससे डीजल की खपत कम होती है और मजदूरी पर होने वाला खर्च भी घटता है।

एक अनुमान के अनुसार, पारंपरिक खेती की तुलना में जीरो टिलेज अपनाने वाले किसान प्रति एकड़ हजारों रुपये तक की बचत कर सकते हैं। छोटे और सीमांत किसानों के लिए यह बचत अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनकी आय का बड़ा हिस्सा खेती की लागत में ही खर्च हो जाता है।

जल संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

भारत के अनेक क्षेत्रों में भूजल स्तर तेजी से नीचे जा रहा है। सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता कृषि का सबसे बड़ा प्रश्न बनती जा रही है। जीरो टिलेज मिट्टी की नमी को लंबे समय तक बनाए रखने में मदद करती है।

जब खेत की जुताई नहीं होती, तब मिट्टी की प्राकृतिक संरचना बनी रहती है और उसमें मौजूद नमी जल्दी समाप्त नहीं होती। परिणामस्वरूप सिंचाई की आवश्यकता कम पड़ती है। यह तकनीक जल संरक्षण की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी मानी जाती है।

(क्रमशः)

संवाद दर्शन

हिन्दी पाक्षिक

सलाहकार संपादक
देवेन्द्र मिश्र

संपादक
संजीव कुमार

प्रकाशक एवं मुद्रक
बिमल कुमार जैन

प्रिंटर्स
लोकवाणी प्रिंटिंग प्रेस,
शशि काम्प्लेक्स,
नाला रोड, कदमकुआँ
पटना

पता
विश्व संवाद केंद्र
104-105, सूर्या अपार्टमेंट,
फ्रेजर रोड, पटना - 800 001
संपर्क = 0612 2216048

ई-मेल- vskpatna@gmail.com
vskbihar@gmail.com
वेबसाइट- www.vskbihar.com

सुभाषित

क्षणशः कणशश्चौव विद्यां अर्थं च साधयेत्।
क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम्॥

अर्थात् – प्रत्येक क्षण का उपयोग सीखने के लिए और प्रत्येक छोटे से छोटे सिक्के का उपयोग उसे बचाकर रखने के लिए करना चाहिए। क्षण को नष्ट करके विद्या प्राप्ति नहीं की जा सकती और सिक्कों को नष्ट करके धन नहीं प्राप्त किया जा सकता।

अनुक्रमणिका

बोध कथा 02
नारद स्मृति.. 03
स्वदेशी.. 05
विशेष 07
अपनी हिन्दी.. 10
संघ शताब्दी वर्ष 11

पाठकों के नाम पत्र

प्रिय पाठक,
सादर नमस्कार।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानंद होंगे। विदित हो कि 'संवाद दर्शन' पत्रिका राष्ट्र तथा प्रदेश की घटनाओं और महत्वपूर्ण बिन्दुओं को आधार बनाकर प्रकाशित हो रही है। आपका स्नेह हमेशा प्राप्त होता रहता है। पत्रिका द्वारा सदस्यों/ पाठकों के नाम, पता, दूरभाष तथा ई–मेल में सुधार के लिए योजना चलायी जा रही है। संवाद दर्शन परिवार आशा करता है कि पत्रिका आप तक पहुंच रही होगी। यदि नहीं पहुंच रही है तो आप हमारे दूरभाष पर संपर्क कर या हमारे पते पर पत्र लिखकर अपने पता का सुधार करवा सकते हैं।

शेष शुभ!

सफलता का रहस्य

एक बार एक गाँव में अनंग नाम का एक बालक रहता था । एक दिन अनंग और उसके पिता एक बैलगाड़ी में अनाज लेकर नगर ले जा रहे थे । गाँव से कुछ दूर निकले ही थे कि बैलगाड़ी का पहिया एक गड्ढे में धस गया । अनंग और उसके पिताजी ने बहुत कोशिश की, किन्तु वह बैलगाड़ी का पहिया निकालने में असमर्थ रहे । थक हारकर एक पेड़ की छाव में जा बैठे ।

थोड़ी ही देर बाद अनंग ने देखा कि नदी की ओर से स्नान करके भोलू पहलवान आ रहा है । वह तुरंत दोड़कर उसके पास गया और बोला, " भोलू भैया ! हमारी बैलगाड़ी का पहिया निकालने में हमारी मदद कीजिए ।"

भोलू – कहाँ है बैलगाड़ी ?

अनंग हाथ से इशारा करते हुये बोला – वो वहाँ रास्ते में पड़ी है ।

भोलू पहलवान बैलगाड़ी की ओर चल दिया जैसे कि उसे किसी ने कुश्ती के लिए ललकारा गया हो । अनंग अपने पिताजी को बुलाने गया । जब अनंग लौटकर बैलगाड़ी की ओर आया तो उसने देखा कि भोलू भैया ने अकेले ही बैलगाड़ी का पहिया खिलोने की तरह उठाकर खड्डे से बाहर रख दिया । अनंग को यह देख बड़ा आश्चर्य हुआ । वह यह तो जानता था कि भोलू भैया पहलवान है किन्तु उसे नहीं पता था कि बैलगाड़ी उनके लिए खिलौना है ।उसने सहज उत्सुकतावश भोलू भैया से पूछा दृ भोलू भैया ! क्या मैं भी आपकी तरह शक्तिशाली हो सकता हूँ ?

भोलू पहलवान बोला दृ हाँ ! क्यों नहीं , किन्तु उसके लिए खूब सारा व्यायाम करना पड़ेगा

इतने में अनंग के पिताजी आ गये । उन्होंने भोलू को धन्यवाद कहा और बैलों को गाड़ी में जोतने लगे ।

दोनों बाप दृ बेटे अपना अनाज नगर बेचकर आ गये किन्तु तब से लेकर अब तक अनंग पहलवान बनने के बारे में सोचता रहा । पहलवानी का भुत उसके दिमाग में ऐसा घुसा कि कब नगर जाकर वापस आये उसे कुछ ठिकाना ही नहीं रहा । रास्ते भर वह पहलवानी के सपने देखता रहा ।

जैसे ही वह गाँव पहुँचा, दोड़कर भोलू भैया३. भोलू भैया ३.. चिल्लाता हुआ भोलू पहलवान के घर गया ।

भोलू दृ क्या हुआ, अनंग ? ऐसे पागलों की तरह क्यों चिल्ला रहे हो ?

अनंग – भोलू भैया ! मुझे व्यायाम सिखना है ।

भोलू – यह भी कोई व्यायाम करने का समय है, भला । जाओ सुबह आना ।

अनंग भी कहाँ का मानने वाला था । वह जिद पर उतर आया । हार मानकर भोलू भैया ने उसे कुछ व्यायाम बता दिए और कल सुबह आने को कहा ।

खुशी दृ खुशी अनंग घर चला आया । उत्साह में आकर उसने जितना सिखा उतना ही अनवरत करना शुरू कर दिया । यह सब उछल दृ कूद करते देख माँ ने उसे मना किया, किन्तु वह नहीं माना, परिणाम यह हुआ कि दुसरे दिन सुबह वह बिस्तर से उठ ही नहीं पाया । फिर माँ ने उसे खूब डांटा और कहने लगी, " और करो व्यायाम, बड़े आये पहलवान बनने वाले ।"

माँ के यह कटु शब्द सुन अनंग को भोलू भैया पर क्रोध आया । वह यह सोचने लगा कि भोलू भैया ने जरुर मुझे गलत व्यायाम बताया होगा । अतः वह गुस्से से भरकर जैसे दृ तैसे चलकर भोलू भैया के घर गया । भोलू भोजन कर रहा था ।

अनंग दृ भोलू भैया ! आपने मुझे ये कैसा व्यायाम बताया ! मेरे सब हाथ पैर दर्द कर रहे है ?

भोलू बोला दृ अनंग ! हर काम को करने का एक निश्चित समय और परिमाण होता है । यदि हम असमय अनिश्चित मात्रा में कोई कार्य करेंगे तो वह अनर्थ ही उपस्थित करेगा । पहलवान बनना कोई एक दो दिन का कार्य नहीं है । इसके लिए दीर्घकाल तक धैर्य के साथ सतत प्रयास करना पड़ता है । तब जाकर सफलता मिलती है । यह अटल नियम है ।

यह नियम ना केवल पहलवानी के साथ लागू होता है, बल्कि दुनिया की हर एक सफलता के साथ लागू होता है । जीवन में कोई ठोस सफलता प्राप्त करने के लिए नियमित रूप से धैर्य पूर्वक पूर्ण मनोयोग के साथ लगे रहना पड़ता है ।

नए लोकतंत्र के दौर में भारत

— रामबहादुर राय

स्वतंत्रता के 80 साल बाद भारत नए लोकतंत्र के दौर में है और लोकतंत्र की नई परिभाषा गढ़ रहा है। यह इसलिए हो सका है क्योंकि भारत ने पश्चिम के लोकतंत्र से मुक्ति पा ली है। इसके साथ ही एक चुनौती भी है कि इस नए लोकतंत्र को गढ़ने में कई सामाजिक प्रश्न हल करने होंगे। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर ने भी कहा था कि भारत में राजनीतिक लोकतंत्र प्राप्त कर ली है संविधान के रूप में उसे स्वीकार भी किया है परंतु आने वाला समय सामाजिक लोकतंत्र का होगा।

उक्त बातें पद्म भूषण से सम्मानित देश के चर्चित पत्रकार राम बहादुर राय ने 9 मई को कहीं। विश्व संवाद केंद्र द्वारा आयोजित आद्य पत्रकार देवर्षि नारद स्मृति कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के तौर पर समारोह को संबोधित कर रहे थे। श्भारत के लोकतंत्र की आंतरिक शक्तिश विषयक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी भारत के ऐसे पहले प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने भारत के संविधान को शत प्रतिशत स्वीकार किया है। पहले के सारे प्रधानमंत्रियों ने संविधान में अपने–अपने तरीके से परिवर्तन के प्रयास किए। सबसे पहले पं. जवाहरलाल नेहरू ने 18 मई, 1951 को बने बनाए संविधान में असंवैधानिक तरीके से संशोधन कराया जिसमें नागरिक अधिकारों पर आंशिक अंकुश लगाने का संदर्भ था। इसके बाद इंदिरा गांधी ने तो संविधान की हत्या ही कर दी। नरेंद्र मोदी संभवतः एकमात्र प्रधानमंत्री हैं जो सार्वजनिक समारोहों में भारत को लोकतंत्र की जननी बताते हैं।

भारत में लोकतंत्र की आंतरिक शक्ति के बारे में चर्चा करते हुए श्री राय ने कहा कि भारत ही एकमात्र देश है जहां आपातकाल रूपी तानाशाही लगने के तुरंत बाद लोकतंत्र फिर से बहाल हो

गया। यही भारत के लोकतंत्र की असली आंतरिक शक्ति है। आजादी के बाद जब लगातार तीन चुनाव कांग्रेस पार्टी ने जीत लिए तो पश्चिम के राजनीतिक विशेषज्ञों ने भविष्यवाणी की भारत में लोकतंत्र अधिक दिन तक जीवित नहीं रहेगा। वास्तविकता यह है कि ये लोग पुस्तकों में राजनीतिक विज्ञान के सैद्धांतिक अवधारणाओं को आधार बनाकर भारत के बारे में भविष्यवाणी कर रहे थे, जबकि भारत के लोकतंत्र को सामान्य व्यक्ति अपने असल जीवन में जीता है और इस देश में लोकतंत्र इस सामान्य व्यक्ति के आचरण के बल पर फल–फूल रहा है।

उन्होंने 25 नवंबर, 1949 को भीमराव अंबेडकर द्वारा संविधान पर दिए गए भाषण का उल्लेख करते हुए कहा कि सामाजिक लोकतंत्र को अपनी आंतरिक शक्ति से ही भारत प्राप्त कर सकता है, क्योंकि भारत में भले ही कोई पॉलीटिशियन बेईमान, पदलोलुप या भ्रष्ट हो सकता है लेकिन यहां का नागरिक अपने लोकतांत्रिक कर्तव्य के प्रति हमेशा से ईमानदार रहा है और यही भारतीय लोकतंत्र की आंतरिक शक्ति है।

आईआईटी पटना के निदेशक प्रोफेसर टी एन सिंह ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि यह संगोष्ठी अति आवश्यक विषय पर आयोजित की गई है क्योंकि कई बार लोकतंत्र में दिखता कुछ और है तथा होता कुछ और है। भारत जैसा विशाल देश तमाम चुनौतियों का सामना करते हुए एक परिपक्व लोकतंत्र की ओर तेजी से बढ़ रहा है, यह संतोष की बात है।

इस पत्रकार सम्मान समारोह में वर्ष– 2026 के लिए देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद पत्रकारिता शिखर सम्मान वरिष्ठ पत्रकार लव कुमार मिश्र को प्रदान किया गया। वहीं उत्कृष्ट रिपोर्टिंग के लिए केशवराम भट्ट पत्रकारिता सम्मान प्रभात खबर से जुड़े वरिष्ठ पत्रकार सुबोध कुमार नंदन को तथा बाबूराव पटेल रचनाधर्मिता सम्मान वरिष्ठ छायाकार दीपक कुमार को प्रदान किया गया। पत्रकार सम्मान समिति की जानकारी वरिष्ठ पत्रकार मणिकांत ठाकुर ने की। वहीं सम्मानों की घोषणा वरिष्ठ पत्रकार कृष्णकांत ओझा ने की। सम्मानित पत्रकारों के संक्षिप्त जीवन वृत्त को दर्शाते हुए एक डॉक्यूमेंट्री का भी प्रदर्शन किया गया।

इससे पूर्व विषय प्रवेश कराते हुए वरिष्ठ पत्रकार प्रियरंजन भारती ने कहा कि भारत ने ढाई हजार वर्ष पूर्व से ही पूरे विश्व के लिए लोकतंत्र का एक स्पष्ट ढांचा प्रस्तुत किया था और इसकी जो आंतरिक शक्ति है, वह भारत के प्रत्येक नागरिक के चौतन्य में स्थित है। विश्व संवाद केंद्र के सचिव व दीघा के विधायक डॉ. संजीव चौरसिया ने अपने स्वागत संबोधन में विश्व संवाद केंद्र द्वारा गत 27 वर्षों में किए गए कार्यों की संक्षिप्त चर्चा की। उन्होंने बताया कि आद्य पत्रकार देवर्षि नारद स्मृति कार्यक्रम में पत्रकारों को सम्मानित किया जाता है तथा प्रत्येक वर्ष जनवरी में 12 दिनों का नागरिक पत्रकारिता कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इसमें प्रशिक्षित पत्रकार देश के विभिन्न मीडिया संस्थानों में सक्रिय पत्रकारिता कर रहे हैं। इस वर्ष पत्रकारिता कार्यशाला के प्रतिभागियों को इस अवसर पर मुख्य अतिथि राम बहादुर राय और कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. टीएन सिंह द्वारा प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। मंच संचालन विश्व संवाद केंद्र के संपादक संजीव कुमार ने तथा धन्यवाद ज्ञापन संवाद केंद्र के न्यासी अभिषेक कुमार ने किया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र कार्यवाह डॉ. मोहन सिंह, क्षेत्र के प्रचार प्रमुख राजेश पाण्डेय, बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रो. अरुण भगत, बीबीए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो ऋषि राय, टीपीएस कॉलेज के प्राचार्य प्रो. तपन शांडिल्य, प्रो. मधु वर्मा, फिल्मकार प्रशांत रंजन, रीतेश परमार, अर्थशास्त्री डॉ. सुधांशु कुमार, डॉ. नीरज कृष्ण, वरिष्ठ पत्रकार देवेंद्र मिश्र, राकेश प्रवीर, अवध कुमार समेत राजधानी के पत्रकार, छायाकार, जनसंचार के प्राध्यापक, विद्यार्थी व समाज के अन्य बुद्धिजीवी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

भारत की 'स्व'देशी जीवन–शैली में 'स्व' के आयाम

(गतांक से आगे)

– मनमोहन वैद्य

भारत की स्वदेशी जीवन–शैली में निहित 'स्व' के भारत में निर्मित वस्तुओं का प्रधानतः उपयोग करने के साथ अनेक महत्वपूर्ण पहलू हैं।

"थोड़ा अधिक देना" : भारत का मौन संस्कार

अंग्रेज शासन से पहले भारत में एकीकृत शासन नहीं था। भाषा, पूजा–पद्धति और जीवन–शैली में विविधता थी। फिर भी एक परंपरा पूरे भारत में सदियों से देखने को मिलती है ।

जब कोई द्रव पदार्थ (दूध, तेल आदि) मापकर दिया जाता है, तो पूरा माप भरने के बाद थोड़ा ऊपर से अधिक देना। तराजू में तौलते समय भी कांटा बीच में आने के बाद मुट्ठी भर थोड़ा अधिक देना : यह परंपरा आज भी विशेषकर ग्रामीण भारत में जीवित है।

यह केवल व्यापार की शैली नहीं, बल्कि भारत का 'स्व'भाव है। इसके पीछे की भावना स्पष्ट है – "मैं जो मूल्य ले रहा हूँ, उसके बदले समाज को किसी भी स्थिति में कम नहीं, बल्कि थोड़ा अधिक ही दूँ।" समाज को अधिक लौटाने का भाव – यही भारत है।

भ्रष्टाचार का स्थायी समाधान

दुर्भाग्यवश आधुनिक शिक्षा व्यक्ति को अधिक आत्म–केंद्रित और केवल आर्थिक लाभ के दृष्टिकोण से सोचने वाला बना रही है। जबकि भारत का सामान्य जन समाज को अधिक देने में सहज आनंद अनुभव करता है। यही भारत का 'स्व'भाव है। यदि इस 'स्व'भाव का जागरण हो, और इसे व्यवहार में उतारा जाए, तो भ्रष्टाचार के लिए स्थान ही नहीं बचेगा। भाव स्पष्ट है – ''मैं अपने कार्य के लिए जो वेतन या मूल्य लेता हूँ, उससे अधिक समाज को लौटाना है, कम किसी भी स्थिति में नहीं।'' यही भारत की स्वदेशी जीवन–शैली और भारत के 'स्व' का सच्चा प्रकटीकरण है।

स्वामी विवेकानंद की आयरिश मूल की शिष्या भगिनी निवेदिता ने समाज जीवन से जुड़ी एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात कही है। उनका कहना है कि जिस समाज में लोग अपने परिश्रम से अर्जित पारिश्रमिक को केवल अपने तक सीमित न रखकर

समाज के हित में अर्पित करते हैं, वहाँ सामूहिक प्रयास से एक प्रकार की सामाजिक पूँजी (social capital) का निर्माण होता है। इसी सामाजिक पूँजी के बल पर समाज समृद्ध बनता है और समाज का प्रत्येक व्यक्ति भी समृद्ध बनता है। यही धर्म है। यह धर्म किसी पंथ या रिलीजन तक सीमित नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने और परस्पर एक सूत्र में बाँधने वाली जीवन–दृष्टि है।

निवेदिता आगे कहती हैं कि जिस समाज में लोग अपने परिश्रम का फल केवल स्वयं के लिए संचित करते हैं और समाज को लौटाते नहीं हैं, उस समाज में कुछ व्यक्ति तो संपन्न दिखाई दे सकते हैं, किंतु समाज दरिद्र बना रहता है। इसलिए यदि इस विचार को स्वदेशी जीवनशैली का अभिन्न अंग बना लिया जाए, तो समाज का संपूर्ण स्वरूप ही बदल सकता है। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति का सजग और सक्रिय सहयोग आवश्यक है।

भारत का विचार और आचरण सदा से यह रहा है : उत्पादन में प्रचुरता, वितरण में समानता और उपभोग में संयम। अपने उपभोग को संयमित कर, अपने अधिकार का ही बचा हुआ समाज के हित में आत्मीयता से समर्पित करना ही धर्म है। वहीं, दूसरों को कष्ट पहुँचाकर या उनके अधिकारों को छीनकर अपना स्वार्थ साधना पाप है। इसी भावना को ध्यान में रखते हुए स्वतंत्रता के बाद भारत के नेतृत्व ने कुछ प्रतीकात्मक और विचार प्रधान निर्णय लिए। लोकसभा का आदर्श वाक्य है – "धर्मचक्र प्रवर्तनाय", राज्यसभा का – "सत्यम् वद, धर्मम् चर", और भारत के सर्वोच्च न्यायालय का बोध वाक्य है – "यतो धर्मस्ततो जयः"। यहाँ तक कि हमारे राष्ट्रध्वज में स्थित चक्र भी धर्मचक्र का प्रतीक है। भारत मूलतः धर्मप्राण राष्ट्र है। जब धर्म के अनुशासन में अर्थ और काम पुरुषार्थ चलते हैं, तब मोक्ष स्वाभाविक हो जाता है।

दया धर्म है, अहंकार पाप है। इसलिए जीवन में एक ओर, एकांत में आत्म साधना और दूसरी ओर, (लोकांत में) समाज के बीच सेवा : दोनों का संतुलन आवश्यक है। स्वामी विवेकानंद ने इसी भाव को "शिवभाव से जीव सेवा" अर्थात To serve man is to serve God के सूत्र द्वारा स्पष्ट किया और दरिद्र नारायण की सेवा को ईश्वर–पूजा के समान माना। यही भारत का 'स्व' है : यही हमारी स्वदेशी जीवनशैली है।

भगवद्गीता के अठारहवें अध्याय में कहा गया है – "स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः"

और "स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः" अर्थात मनुष्य अपने स्वधर्म रूपी कर्म में रत रहकर सिद्धि प्राप्त करता है और अपने कर्मों के माध्यम से ईश्वर की आराधना करता है।

संत ज्ञानेश्वर इसे और सरल शब्दों में कहते हैं – "तेया सर्वात्मका ईश्वरा, स्वकर्म कुसुमांची वीरा, पूजा केली होय अपारा, तोषा लागी।" (अर्थ– यह है कि समाजरूपी सर्वव्यापक ईश्वर की अपने कर्मरूपी पुष्पों से की गई पूजा उसे प्रसन्न करती है)

इन सभी विचारों का सार यही है कि हमारा प्रत्येक कार्य समाज–पूजा के भाव से किया जाए। जिस प्रकार पूजा के लिए हम ताजे, सुगंधित और श्रेष्ठ पुष्प चुनते हैं, उसी प्रकार समाज के लिए किए जा रहे हमारे सभी कर्म भी उत्कृष्ट, शुद्ध और सर्वोत्तम होने चाहिए।

यही भारत का 'स्व' है। यही हमारा 'स्व'भाव बने। यही हमारी जीवनशैली का अंतरंग हिस्सा बने। तब हमारा समाज–जीवन और राष्ट्र–जीवन कितना सुंदर, समृद्ध और मनभावन होगा !

(समाप्त)

''स्वदेशी केवल एक राजनीतिक कार्यक्रम या आर्थिक साधन नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र के पुनरुत्थान, स्वावलंबन और उसकी आत्मा को पुनः प्राप्त करने का एक पवित्र मंत्र है।'' – **महर्षि अरविन्द**

पुरुषोत्तम मास

इस वर्ष 17 मई को ज्येष्ठ अधिक मास की शुरुआत हो रही है। हिंदू धर्म में इस महीने को बेहद पवित्र माना जाता है। इसे अधिक मास, मलमास और पुरुषोत्तम मास के नाम से भी जाना जाता है। मान्यता है कि इस महीने में भगवान विष्णु की पूजा जप–तप और दान करने से कई गुना पुण्य मिलता है। इस दौरान किए गए अच्छे कामों का फल जल्दी मिलता है और घर में सुख–समृद्धि बनी रहती है।

क्या होता है मलमास

पुरुषोत्तम मास हर तीन साल में एक बार आता है। हिंदी पंचांग के हिसाब से तीन साल में एक अतिरिक्त महीना जुड़ जाता है जिसे अधिक मास कहा जाता है। पहले इस महीने को मलमास कहा जाता था। मल का मतलब गंदगी होता हैं इसलिए इसे मलमास कहते हैं। भगवान विष्णु ने इसे अपना नाम देकर पुरुषोत्तम मास बना दिया। तभी से यह महीना भगवान विष्णु को समर्पित माना जाता है।

जिस चंद्र मास में संक्रांति नहीं होती, उसे अधिमास या मलमास कहते हैं। हर तीन वर्ष पश्चात आने वाले इस मास को पुरुषोत्तम मास (17 मई से 15 जून) भी कहा जाता है। ब्रह्मा द्वारा रचित प्रकृति के नियमानुसार बारह माह थे।

हिरण्यकश्यप मारने के लिए बना अधिमास

दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने अमर होने के लिए ब्रह्मा की कठोर तपस्या की और उसने उनसे अमर होने का वरदान मांगा, लेकिन ब्रह्मा ने अमर होने का वरदान देने की जगह दूसरा वरदान मांगने को कहा। तब हिरण्यकश्यप ने ब्रह्मा से कहा कि उनके बनाए प्राणी–सुर–असुर, पशु–पक्षी और मनुष्य उसे न मार पाएं। वह न दिन में मरे, न रात में। न घर के भीतर मरे, न घर के बाहर। न पृथ्वी पर मरे, न आकाश में। वह न किसी युद्ध में अस्त्र से मरे, न किसी शस्त्र से। न बारह मास में से किसी मास में मरे। वह पूरे ब्रह्मांड का एकछत्र राजा कहलाए। ब्रह्मा ने उसे उसका मनचाहा वरदान दे दिया।

वरदान पाकर हिरण्यकश्यप अपने को भगवान मानने लगा। जो उसे भगवान नहीं मानता, वह उसका वध करवा देता। उसका पुत्र प्रह्लाद भगवान विष्णु का भक्त था। हिरण्यकश्यप ने अपने पुत्र को खूब यातनाएं दीं, लेकिन उसने न तो भगवान विष्णु की भक्ति छोड़ी और न ही अपने पिता को भगवान माना। अंत में भगवान विष्णु ने ब्रह्मा के वरदान के अनुसार श्नरसिंहश रूप में प्रकट होकर हिरण्यकश्यप का वध किया। इसके लिए उन्होंने बारह मास के अतिरिक्त तेरहवें मास के रूप में अधि मास का निर्माण किया। नरसिंह रूप धरा यानी न सुर, न असुर, न नर, न पशु और न ही ब्रह्मा की सृष्टि का अंग। उस समय सांध्य वेला थी यानी न दिन था, न रात। उसका न महल के भीतर, न बाहर, चौखट पर ले जाकर वध किया। यह युद्ध भी नहीं था। उन्होंने

उसे अपनी जंघा पर रखकर उसके पेट को अपने नाखूनों से चीर कर वध किया। यानी न तो वह आकाश में था, न पृथ्वी पर। न ही किसी अस्त्र से मरा, न ही किसी शस्त्र से।

क्या है पुरुषोत्तम मास

ज्योतिषाचार्य पीके युग बताते हैं कि सौर वर्ष (लगभग 365 दिन और 5 घंटे) और चंद्र वर्ष (लगभग 358 दिन) के बीच लगभग 8 दिनों के अंतर को पूरा करने के लिए अधिकमास की व्यवस्था भारतीय पंचांगों में है। प्रत्येक तीन साल में हिन्दी माह का कोई एक माह अधिकमास या पुरुषोत्तम मास होता है। अधिक मास में मांगलिक कार्य भले नहीं हो, लेकिन इस महीने में पूजा–पाठ, तीर्थ यात्रा, कथा आदि का विशेष महत्व माना जाता है।

कब से लगेगा पुरुषोत्म मास, इस मास में क्या कार्य करें इस साल पुरुषोत्म मास 17 मई से लगेगा। इस मास में भगवान विष्णु की पूजा का खास महत्व है, इसके साथ ही इस दिन सूर्य की भी पूजा करनी चाहिए। मास में रोज भागवत पुराण का पाठ करना चाहिए और विष्णु पुराण को सुनना चाहिए। इस मास में भगवान विष्णु की अराधना अधिक फल देती है। तीन काम इस मास में बहुत जरूरी है। सुबह सवेरे उठकर विष्णु जी की पूजा, भगवान विष्णु के अवतार बालगोपाल को अभिषेक कराएं, उन्हें माखन मिश्री अर्पित करें। तुलसी जी की सेवा करें, सुबह शाम खास पूजा करें, उन्हें सुहाग का सामान अर्पित करें, शुबह शाम दीप जलाएं। तुलसी की अराधना इस मास में अधिक फल देने वाली बताई गई है। इस मास में सुबह उठकर सूर्य को जल अर्पित करें और शाम के समय पीपल के पेड़ में दीपक जलाएं। इससे विष्णु भगवान प्रसन्न होते हैं। पवित्र नदियों में स्नान भी इस मास में अधिक फल देता है। स्नान के बाद पितरों के लिए दान करें। इसके अलावा भगवान शिव का भी पंचामृत से अभिषेक करना उत्तम होता है। उनको चंदन का लेप लगाएं। दान के लिए इस मास में जूते, छाता, घड़ा, तिल, गुड़ अनाज और कपड़ों का दान उत्तम माना गया है। गाय की सेवा भी इस मास में अधिक फल देती है।

इस साल ज्येष्ठ (जेठ) के मास में अधिक मास पड़ रहा है। ये बहुत ही शुभ संयोग है, इससे पहले 1999 में ऐसा संयोग पड़ा था, जब इस मास में अधिकमास पड़ा था। आपको बता दें कि अधिकमास को ही पुरुषोत्तम मास कहते हैं। इसमें साल में एक महीना अधिक होता है। जिस साल यह मास होता है, उस साल सभी त्योहार 15–20 दिन लेट होते हैं। इस साल ज्येष्ठ मास आधा मांगलिक कार्यों के लिए शुभ है लेकिन आधे में मांगलिक कार्य नहीं होंगे। साल 2026 के 11 वर्षों बाद 2037 में फिर से ज्येष्ठ अधिक मास होने का संयोग पड़ेगा। इसके पहले वर्ष 1999 में मई–जून माह में ज्येष्ठ अधिकमास पड़ा था।

इसलिए बना अधिमास

हिरण्यकश्यप के वध करने के उद्देश्य से बना तेरहवां मास अधिमास (मलमास) कहलाया। बारह मास में से हर मास के देवता थे, लेकिन कोई भी देवता इस मास के अधिपति बनने को तैयार नहीं हुए। तब सभी ऋषि–मुनियों सहित अधि मास विष्णु के पास पहुंचे और उन्हें अपनी व्यथा सुनाई। तब विष्णु उन्हें कृष्ण के पास लेकर गए। कृष्ण ने अधिमास को वरदान देते हुए कहा कि आज से मैं तुम्हारा स्वामी हूं और तुम मेरे एक नाम पुरुषोत्तम मास के नाम से जाने जाओगे। पुरुषोत्तम मास होने के बावजूद इस मास में मांगलिक और शुभ कार्य करने वर्जित माने गए हैं।

पुरुषोत्तम मास में क्या करें

महंत कामेश्वरानंद वेदांताचार्य बताते इस महीने में सबसे ज्यादा भगवान विष्णु की आराधना करनी चाहिए. अगर संभव हो तो भागवत कथा सुननी चाहिए और घर में भागवत ग्रंथ पढ़ना चाहिए. विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करना भी बहुत शुभ माना गया है. भगवान विष्णु को मालपुआ बेहद प्रिय है. ऐसे में कांसे के बर्तन में 33 मालपुए रखकर भगवान लक्ष्मी नारायण के सामने अर्पित करें. इसके बाद ओम नमो भगवते वासुदेवाय नमः मंत्र का जाप करें और भगवान से दुख–दरिद्रता दूर करने की प्रार्थना करें. फिर ये मालपुए जरूरतमंद लोगों में बांट दें. इसे बहुत पुण्यदायक माना गया है.

मलमास में क्या नहीं करना चाहिए

महंत कामेश्वरानंद वेदांताचार्य बताते हैं अधिक मास में शादी–विवाह जैसे मांगलिक कार्य नहीं करने चाहिए. यह महीना पूरी तरह आध्यात्मिक साधना के लिए माना गया है. जो काम हमारे परलोक और पुण्य के लिए हों वही इस महीने में करने चाहिए. जितना ज्यादा जप, तप और भजन करेंगे उतना ही फायदा मिलेगा. इस मलमास में गंगा जैसी पवित्र नदियों में स्नान करने दान–पुण्य करने और जरूरतमंदों की मदद करनी चाहिए मान्यता है कि इस महीने में सच्चे मन से भगवान विष्णु की भक्ति करने से रुके हुए काम पूरे होते हैं और जीवन में सुख–समृद्धि आती है।

राजगीर मलमास मेला : आस्था, इतिहास और संस्कृति का अद्भुत संगम

बिहार के नालंदा जिले में स्थित राजगीर भारत की प्राचीनतम ऐतिहासिक और धार्मिक नगरीयों में से एक है। कभी मगध साम्राज्य की राजधानी रहा यह नगर हिंदू, बौद्ध और जैन धर्म की साझा विरासत को अपने भीतर समेटे हुए है। इसी पावन भूमि पर प्रत्येक तीसरे वर्ष अधिमास अथवा पुरुषोत्तम मास के अवसर पर विश्वप्रसिद्ध राजगीर मलमास मेला आयोजित होता है। यह मेला केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक चेतना और सामाजिक समरसता का विराट उत्सव है।

हिंदू पंचांग के अनुसार सूर्य और चंद्र वर्ष के बीच समय के अंतर को संतुलित करने के लिए लगभग प्रत्येक तीन वर्ष पर एक अतिरिक्त मास जोड़ा जाता है, जिसे मलमास या पुरुषोत्तम मास कहा जाता है। सामान्यतः इस मास में विवाह और अन्य मांगलिक कार्य नहीं किए जाते, किंतु राजगीर में इसका विशेष महत्व है। पौराणिक मान्यता है कि इस पवित्र अवधि में 33 करोड़ देवी–देवता राजगीर में निवास करते हैं। यही कारण है कि देश के विभिन्न राज्यों से लाखों श्रद्धालु यहां पहुंचकर स्नान, पूजा, जप, तप और दान–पुण्य करते हैं।

राजगीर की पहचान उसके गर्म जलकुंडों से भी जुड़ी हुई है। मलमास मेले का सबसे प्रमुख आकर्षण ब्रह्मकुंड है, जिसे अत्यंत पवित्र माना जाता है। लगभग 45 से 50 डिग्री सेल्सियस तापमान वाले इस प्राकृतिक गर्म जलकुंड में स्नान के लिए श्रद्धालुओं की लंबी कतारें लगती हैं। धार्मिक मान्यता है कि यहां स्नान करने से पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। वायु पुराण में भी राजगीर के पवित्र कुंडों का उल्लेख मिलता है। वहीं वैज्ञानिक दृष्टि से भी इस जल में उपस्थित खनिज तत्वों को त्वचा संबंधी रोगों के लिए लाभकारी माना जाता है।

मलमास मेले के दौरान राजगीर का वातावरण पूरी तरह आध्यात्मिक रंग में रंग जाता है। देशभर से आए साधु–संत, महात्मा और विभिन्न अखाड़ों के प्रतिनिधि धार्मिक प्रवचन, भजन–कीर्तन और यज्ञ–हवन का आयोजन करते हैं। ध्वजारोहण और शाही स्नान जैसी परंपराएं मेले की विशेष पहचान हैं। श्रद्धालु धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेकर आत्मिक शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव करते हैं।

यह मेला केवल धार्मिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी अत्यंत प्रभावशाली है। लाखों श्रद्धालुओं के आगमन से स्थानीय व्यापार, होटल, परिवहन, हस्तशिल्प और लघु उद्योगों को बड़ा प्रोत्साहन मिलता है। मेले में बिहार की लोकसंस्कृति, पारंपरिक कलाएं, हस्तनिर्मित वस्तुएं और स्थानीय व्यंजन भी आकर्षण का केंद्र बनते हैं। इस प्रकार यह आयोजन पर्यटन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई ऊर्जा प्रदान करता है।

मेले के सफल संचालन के लिए राज्य सरकार और जिला प्रशासन विशेष व्यवस्था करते हैं। सुरक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, स्वच्छता, पेयजल, अस्थायी आवास और टेंट सिटी जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं, ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

वास्तव में राजगीर मलमास मेला भारतीय संस्कृति की जीवंत परंपरा का प्रतीक है। यह मेला आस्था, इतिहास, संस्कृति और सामाजिक एकता का ऐसा संगम प्रस्तुत करता है, जो लोगों को धर्म और अध्यात्म के साथ–साथ मानवता और भाईचारे का संदेश भी देता है।

सही शीर्षक

—रवींद्र कुमार

1. गांधीजी की 151वीं जन्मशती तक सिंगल यूज प्लास्टिक से राज्य को करें मुक्त : सी. एम.

गलत शब्द के चयन से यह शीर्षक निरर्थक होने के साथ ही हास्यास्पद भी हो गया है। गांधी जी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को हुआ था और 1969 में उनकी पहली जन्मशती मनाई गई, क्योंकि जन्म के सौ वर्ष पूरे होने पर जन्मशती मनाई जाती है। शती को शताब्दी और अंग्रेजी में सेन्चुरी कहा जाता है। पिछले वर्ष 2019 में उनकी 150वीं जयंती मनाई गई और इस साल उनके जन्म के 151 साल पूरे होने पर 151वीं जयंती मनाई जाएगी। इसकी वजह यह है कि जयंती साल भर पर मनाई जाती हैं। मुख्यमंत्री ने 151वीं जयंती यानी 2 अक्टूबर, 2020 तक सिंगल यूज प्लास्टिक से राज्य को मुक्त कराने की अपील की है। लेकिन, शीर्षक में जयंती के स्थान पर जन्मशती का प्रयोग कर देने से स्थिति हास्यास्पद हो गई है, क्योंकि गांधीजी की 151वीं जन्मशती तो उनके जन्म के पंद्रह हजार एक सौ वर्ष पूरे होने पर मनाई जाएगी। अतः इस शीर्षक का शुद्ध रूप होगा—

गांधीजी की 151वीं जयंती तक सिंगल यूज प्लास्टिक से राज्य को करें मुक्त : सी.एम.

---

2. शादी की नियत से युवती अपहृत

इस शीर्षक के समाचार में बताया गया है कि एक युवक ने एक युवती से शादी करने के लिए उसका अपहरण कर लिया। इस दृष्टि से इस शीर्षक का 'नियत' शब्द विचारणीय है। यह संस्कृत से आया हुआ विशेषण है, जिसका अर्थ नियमतः, पाबंद, निश्चित, मुकर्रर आदि है। उदाहरणार्थ नियत तिथि का अर्थ वह तिथि है, जो किसी काम को करने के लिए निश्चित की गई हो। इससे स्पष्ट है कि इस शब्द से इस शीर्षक का उद्देश्य पूरा नहीं हो रहा, क्योंकि युवती का अपहरण किसी उद्देश्य से किया गया है। दरअसल, उद्देश्य के लिए अरबी का 'नीयत' शब्द है, जो संज्ञा है और स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होती है। उद्देश्य के अतिरिक्त यह इच्छा, मंशा, इरादा, आशय आदि के लिए भी प्रयुक्त होती है। इससे स्पष्ट है कि शीर्षक में संस्कृत के 'नियत' का नहीं, बलिक अरबी की 'नीयत' का प्रयोग होना चाहिए था। 'नियत' का स्त्रीलिंग में प्रयोग भी गलत है, क्योंकि विशेषण होने के कारण इसका कोई लिंग नहीं है। लगता है, स्त्रीलिंग 'नीयत' के भ्रम में इस 'नियत' का प्रयोग कर दिया गया है। अतः इस शीर्षक का शुद्ध रूप होगा—

शादी की नीयत से युवती अपहृत

---

3. रक्तदान शिविर में नर्स से लेकर डॉक्टर ने दिया खून

इस शीर्षक का समाचार पढ़ने से ज्ञात होता है कि अस्पताल में कार्यरत सभी वर्गों के कर्मचारियों ने रक्तदान किया। जब किसी कार्यक्रम में कई प्रकार के लोग भाग लेते हैं, तो शीर्षक में सभी का उल्लेख करना संभव नहीं होता। ऐसी स्थिति में नीचे और ऊपर के व्यक्तियों का उल्लेख कर उन्हें 'से लेकर' से जोड़ कर बाद में 'तक' से समाप्त किया जाता है। इससे सभी प्रकार के लोगों का बोध हो जाता है। इस शीर्षक में भी यही तरीका अपनाया गया है। लेकिन, इसमें 'से लेकर' का प्रयोग कर 'तक' को छोड़ दिया गया है। समाचार पत्रों में ऐसा प्रायः देखा जाता है, क्योंकि शीर्षक लगाने वाले समझते हैं कि 'तक' के बिना भी उनका उद्देश्य पूरा हो गया है, जबकि ऐसा होता नहीं है। 'तक' को छोड़ देने से इस शीर्षक का अर्थ यह निकलता है कि डॉक्टर ने केवल नर्स का खून दिया और अस्पताल के बांकी किसी कर्मचारी ने रक्तदान नहीं किया।

'से लेकर' के साथ 'तक' के प्रयोग की अनिवार्यता क्यों है, इसे इन दो उदाहरणों से समझा जा सकता है — (क) भीड़ पर चौकीदार से लेकर दारोगा ने भांजी लाठी और (ख) भीड़ पर चौकीदार से लेकर दारोगा तक ने भांजी लाठी। इनमें पहले वाक्य का अर्थ यह होगा कि दारोगा ने भीड़ पर चौकीदार की लाठी लेकर भांजी। दूसरी तरफ दूसरा वाक्य यह बतला रहा है कि भीड़ पर थाने के चौकीदार, सिपाही, जमादार, दारोगा आदि सभी कर्मचारियों ने मिलकर लाठी भांजी। अतः 'तक' का प्रयोग नहीं करने से स्थिति कितनी बदल जाती है, इस पर ध्यान देना आवश्यक है। ऐसी स्थिति में इस शीर्षक को इस प्रकार लिखा जाना युक्तिसंगत होगा—

रक्तदान शिविर में नर्स से लेकर डॉक्टर तक ने दिया खून

संस्कृति, संस्कार और आत्मीयता है राष्ट्र का वास्तविक आधार– स्वांत जी

भारत और राष्ट्रीयता हमारे लिए न तो कोई आर्थिक विषय है और न ही राजनीतिकय यह किसी एक भाषा से निर्मित राष्ट्र भी नहीं है। इस राष्ट्र का वास्तविक आधार हमारी संस्कृति, हमारे संस्कार और हमारे भीतर की आत्मीयता है। यह भाव तब प्रकट होता है जब भुज में भूकंप आता है और पूरा देश सहायता के लिए खड़ा हो जाता है। अथवा जब केदारनाथ में मन्दाकिनी फटती है तो देश के कोने–कोने से लोग पहुँचकर सेवा करते हैं। चंद्रयान के चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर पहुँचने पर पूरे देश को एक साथ उल्लास से भर देता है और यही भावना क्रिकेट टीम के विश्व कप जीतने पर हर भारतीय के मन में झलकती है। उक्त विचार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख मा. स्वांत रंजन जी ने 29 अप्रैल को राजगीर में आयोजित प्रमुख जन संगोष्ठी को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अंतर्गत आयोजित इस संगोष्ठी में उन्होंने कहा कि भारत की एकात्म चेतना नई नहीं है। इसे भारतीय इतिहास में भी देखा जा सकता है कृशंकर देव हों या गुरु नानक देव, दोनों ने भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक भ्रमण किया। उन्हें भाषाई बाधाओं ने कभी नहीं रोका। शंकराचार्य जब केरल से निकलकर देश के चारों दिशाओं में चार पीठों की स्थापना कर रहे थे, तब भाषा उनके मार्ग में अवरोध नहीं बनी। यही इस राष्ट्र की मूल भावना हैकृएक संस्कृति, एक आत्मा और एक साझा अनुभूति।

अपने उद्‌बोधन में उन्होंने श्पंच परिवर्तनश की संकल्पना को विस्तार से समझाया। उनका कहना था कि वास्तविक परिवर्तन का आरंभ हमेशा स्वयं से होता है। स्वयं में आए परिवर्तन से परिवार में परिवर्तन आता है, परिवार का परिवर्तन समाज में और समाज का परिवर्तन राष्ट्र में प्रवाहित होता है। राष्ट्र के स्तर पर यह परिवर्तन संपूर्ण सृष्टि को प्रभावित करता है और अंततः यह परिवर्तन परमेष्ठी तक पहुँचता है।

कार्यक्रम में प्रमुख जनों का आभार रामजी सिंहा ने किया। इस अवसर पर प्रांत प्रचारक उमेश कुमार, विद्या भारती के क्षेत्र संगठन मंत्री ख्याली राम, विभाग कार्यवाह मुरारी जी, विभाग प्रचारक इन्द्रनारायण जी समेत कई गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति रही।

हिंदू लड़के की फोटो दिखाई, शादी करने पहुंचा मुस्लिम

दरभंगा जिले के जाले थाना क्षेत्र के सिंघवाड़ा गांव में 15 मई को एक मुस्लिम महिला द्वारा हिन्दू लड़का बताकर मुस्लिम बुजुर्ग से शादी कराने का मामला सामने आया है। घटना इस प्रकार है। यहां की रहनेवाली एक महिला ने अपनी बेटी की शादी तय की। यह शादी दूसरे धर्म की महिला ने तय करवाई। इकरा खातुन नाम की महिला ने लड़की की मां को झांसा देकर राजस्थान के झुंझनू जिले के रहने वाले युवक से शादी कराने की बात कही।

इसके लिए लड़की की मां को 50 हजार रुपए देने का वादा भी किया गया। हालांकि, दलाल इकरा ने लड़की की मां को सिर्फ 20 हजार रुपए ऑनलाइन पेमेंट किए। बाकी पैसे बाद में देने को कहा।

इकरा खातून का पति नूर आलम है। इकरा जाले की रहने वाली है। महिला का ससुराल सीतामढ़ी के आवापुर में है। इकरा 8–9 साल राजस्थान मे थी। पति बैग का काम करता है। तीन लड़के हैं। तीनों पढ़ाई करते हैं। फिलहाल वो दरभंगा जिला के शिवधारा में रहती है।

घर में शादी की तैयारी चल रही थी। बारात दरवाजे पर थी। शादी की रस्म निभाई जा रही थी। जैसे ही दूल्हे को बुलाया गया। लड़की वाले हैरान रह गए। जिस लड़के की उन्हें फोटो दिखाई गई थी, यह वह लड़का नहीं था। लड़की वालों का कहना है कि वो बूढ़े दूल्हे को लेकर आए थे।

लड़की पक्ष ने धोखाधड़ी का आरोप लगाते हुए शादी रुकवा दी और दो महिलाओं सहित पांच लोगों को पकड़ लिया।

पुलिस ने दलाल महिला इकरा खातून समेत तीन लोगों को हिरासत में लिया है। पुलिस मामले की हर एंगल से जांच कर रही है। इस मामले में आरोपी बताई जा रही दलाल महिला इकरा खातून ने बताया, जाले में उसका माइका है। वह राजस्थान में रहती थी। वहीं पर उसकी जान पहचान उस लड़के से हुई।

दलाल इकरा खातून पर आरोप है कि पैसे लेकर राजस्थान के लड़कों की बिहार में शादी करवाती है। बाद में यहां की लड़की को राजस्थान में मार–पीट कर कोठे पर भेजा जाता है।

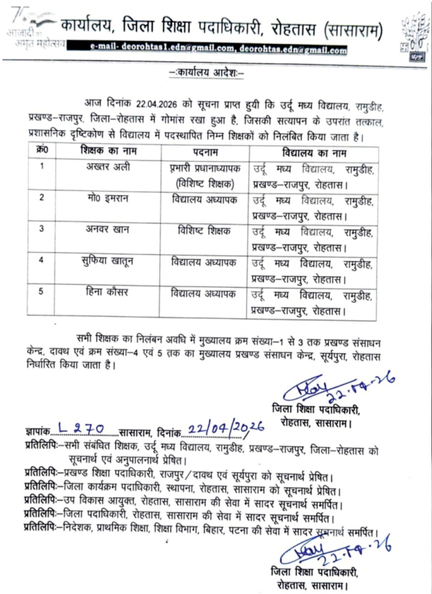
कार्यालय, जिला शिक्षा पदाधिकारी, रोहतास (सासाराम)
e-mail- deorohtas1.edn@gmail.com, deorohtas.edn@gmail.com

–:कार्यालय आदेश:–

आज दिनांक 22.04.2026 को सूचना प्राप्त हुयी कि उर्दू मध्य विद्यालय, रामुडीह, प्रखण्ड–राजपुर, जिला–रोहतास में गोमांस रखा हुआ है, जिसकी सत्यापन के उपरांत तत्काल, प्रशासनिक दृष्टिकोण से विद्यालय में पदस्थापित निम्न शिक्षकों को निलंबित किया जाता है।

क्र0	शिक्षक का नाम	पदनाम	विद्यालय का नाम
1	अख्तर अली	प्रभारी प्रधानाध्यापक (विशिष्ट शिक्षक)	उर्दू मध्य विद्यालय, रामुडीह, प्रखण्ड–राजपुर, रोहतास।
2	मो0 इमरान	विद्यालय अध्यापक	उर्दू मध्य विद्यालय, रामुडीह, प्रखण्ड–राजपुर, रोहतास।
3	अनवर खान	विशिष्ट शिक्षक	उर्दू मध्य विद्यालय, रामुडीह, प्रखण्ड–राजपुर, रोहतास।
4	सुफिया खातून	विद्यालय अध्यापक	उर्दू मध्य विद्यालय, रामुडीह, प्रखण्ड–राजपुर, रोहतास।
5	हिना कौसर	विद्यालय अध्यापक	उर्दू मध्य विद्यालय, रामुडीह, प्रखण्ड–राजपुर, रोहतास।

सभी शिक्षक का निलंबन अवधि में मुख्यालय क्रम संख्या–1 से 3 तक प्रखण्ड संसाधन केन्द्र, दावथ एवं क्रम संख्या–4 एवं 5 तक का मुख्यालय प्रखण्ड संसाधन केन्द्र, सूर्यपुरा, रोहतास निर्धारित किया जाता है।

22.04.26

जिला शिक्षा पदाधिकारी,
रोहतास, सासाराम।

ज्ञापांक L 270 सासाराम, दिनांक 22/04/2026
प्रतिलिपि:–सभी संबंधित शिक्षक, उर्दू मध्य विद्यालय, रामुडीह, प्रखण्ड–राजपुर, जिला–रोहतास को सूचनार्थ एवं अनुपालनार्थ प्रेषित।
प्रतिलिपि:–प्रखण्ड शिक्षा पदाधिकारी, राजपुर/दावथ एवं सूर्यपुरा को सूचनार्थ प्रेषित।
प्रतिलिपि:–जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, स्थापना, रोहतास, सासाराम को सूचनार्थ प्रेषित।
प्रतिलिपि:–उप विकास आयुक्त, रोहतास, सासाराम की सेवा में सादर सूचनार्थ समर्पित।
प्रतिलिपि:–जिला पदाधिकारी, रोहतास, सासाराम की सेवा में सादर सूचनार्थ समर्पित।
प्रतिलिपि:–निदेशक, प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा विभाग, बिहार, पटना की सेवा में सादर सूचनार्थ समर्पित।

22.04.26

जिला शिक्षा पदाधिकारी,
रोहतास, सासाराम।

उर्दू मध्य विद्यालय में गोमांस परोसने के आरोप में 5 शिक्षक निलंबित

बिहार की रोहतास जिले के रामूडीह स्थित उत्क्रमित उर्दू मध्य विद्यालय में गोमांस परोसने के आरोप में प्रधानाध्यापक समेत 5 शिक्षकों को निलंबित कर दिया गया है। यहां 22 अप्रैल को 7 किलो से ज्यादा किसी बड़े जानवर का मांस प्राप्त हुआ था। यह मांस काले रंग की चार थैलियों में था। ग्रामीणों के अनुसार यह गोमांस था, जो मध्याह्न भोजन में बच्चों को खिलाए जाने के लिए लाया गया था। इस विद्यालय में हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदाय के बच्चे पढ़ते हैं। जानकारी मिलते ही बड़ी संख्या में विद्यालय परिसर में ग्रामीणों की भीड़ जुट गई। इस मामले में पुलिस ने संज्ञान लेते हुए 5 शिक्षकों को गिरफ्तार भी कर लिया है।

22 अप्रैल को सामने आया मामला

ग्रामीण रमेश ने बताया कि वे 22 अप्रैल की सुबह अपने बच्चों को स्कूल छोड़ने आए थे। इसी दौरान कुछ बच्चे अपने नाक–मुंह पर हाथ रखकर बाहर निकलने लगे। उन्हें बाहर निकलता देख उन्होंने पूछा कि क्या हुआ है? बच्चों ने इशारा करते हुए जवाब दिया– उस कमरे से दुर्गंध आ रही है। इस पर जब वे कुछ बच्चों के अभिभावक के साथ कमरे के पास गए तो देखा वहां कोने में काले रंग की चार प्लास्टिक थैलियां रखी हैं। थैलियों के अंदर मांस था।

इसके बाद स्कूल में हंगामा शुरू हो गया। मामले की खबर गांव में फैलते ही लोग स्कूल की ओर दौड़ पड़े। थोड़ी ही देर में स्कूल परिसर में सैकड़ों ग्रामीण जमा हो गए।

लोगों ने आरोप लगाया कि यह बच्चों के मिड–डे मील या अन्य तरीके से इस्तेमाल करने की साजिश हो सकती है। हालांकि, इस दावे की पुष्टि अब तक किसी अधिकारी ने नहीं की है।

घटना से नाराज ग्रामीणों ने स्कूल के प्रधानाध्यापक अख्तर अली समेत 5 शिक्षकों पर

गंभीर आरोप लगाए हैं। इसमें 3 पुरुष एवं 2 महिला हैं। लोगों का कहना था कि पूरे मामले की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की जाए।

स्थिति इतनी तनावपूर्ण हो गई थी कि करीब 3 घंटे के लिए स्कूल परिसर के बाहर नारेबाजी और विरोध प्रदर्शन हुआ था।

5 मुस्लिम शिक्षक निलंबित

विद्यालय में कुल 200 विद्यार्थी पढ़ते हैं। इसमें 125 हिंदू और 75 मुस्लिम बच्चे शामिल हैं। वहीं स्कूल में कुल 7 शिक्षक हैं। इसमें प्रधानाध्यापक समेत कुल 5 मुस्लिम शिक्षक – मोहम्मद ईमान, अनवर खान, सूफिया खातून और हिना कौसर शामिल हैं। जबकि 2 शिक्षक हिंदू समुदाय से हैं।

प्रखंड संसाधन केंद्र से जारी पत्र के अनुसार प्रशासनिक कार्रवाई करते हुए दोनों हिंदू शिक्षकों को डेपुटेशन पर दूसरे स्कूल भेज दिया है। वहीं, दूसरी ओर 5 मुस्लिम शिक्षकों को निलंबित कर दिया गया है।

प्रशासन और पुलिस ने संभाला मोर्चा

घटना की जानकारी मिलते ही विक्रमगंज के एसडीएम प्रभात कुमार मौके पर पहुंचे। उनके साथ स्थानीय पुलिस बल भी स्कूल परिसर में पहुंचे। बढ़ते तनाव को देखते हुए अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती की गई।

अधिकारियों ने ग्रामीणों को समझाने का प्रयास किया और भरोसा दिलाया कि पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराई जाएगी। प्रशासन ने लोगों से कानून हाथ में न लेने और शांति बनाए रखने की अपील की। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए स्कूल परिसर और आसपास के इलाके में पुलिस गश्त बढ़ा दी गई है।

रोहतास के पुलिस अधीक्षक रोशन कुमार के अनुसार मामले को गंभीरता से लिया गया है। मौके से बरामद संदिग्ध मांस के नमूने जब्त कर फॉरेंसिक साइंस लैब (एफएसएल) भेजे जा रहे हैं। जांच रिपोर्ट आने के बाद ही यह स्पष्ट हो सकेगा कि बरामद मांस किस जानवर का है।

बिना रिपोर्ट के किसी निष्कर्ष पर पहुंचना उचित नहीं होगा। पुलिस सभी पहलुओं की जांच कर रही है। कुछ संदिग्ध लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ भी की जा रही है।

इस मामले की शिक्षा विभाग भी करेगा जांच

मामले को लेकर शिक्षा विभाग ने भी अलग से जांच शुरू कर दी है। जिला शिक्षा प्रशासन ये पता लगाने की कोशिश कर रहा है कि विद्यालय परिसर के कमरे में संदिग्ध मांस कैसे पहुंचा, किसने रखा और इसका उद्देश्य क्या था? अगर जांच में स्कूल कर्मियों या किसी अन्य व्यक्ति की भूमिका सामने आती है, तो विभागीय कार्रवाई भी की जा सकती है।

सर्वोच्च न्यायालय का ऐतिहासिक निर्णय

26 अक्टूबर, 2005 को भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने एक ऐतिहासिक निर्णय में भारत में विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा बनाए गए गोहत्या विरोधी कानूनों की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखा। भारत के 28 राज्यों में से 20 राज्यों में गायों के वध या बिक्री पर रोक लगाने वाले, वध की गई गाय के अधिनियम को विनियमित करने वाले विभिन्न कानून थे। पुर्वोत्तर, पश्चिम बंगाल तथा दक्षिण भारत के कुछ राज्यों में गोहत्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है। भारत में मौजूदा मांस निर्यात नीति के अनुसार, गोमांस (गाय, बैल और बछड़े का मांस) का निर्यात प्रतिबंधित है। मांस में अस्थि, शव, भैंस का आधा शव भी प्रतिबंधित है और इसे निर्यात करने की अनुमति नहीं है। निर्यात के लिए केवल भैंस के कमजोर मांस, बकरी और भेड़ और पक्षियों के मांस की अनुमति है।

मई माह में स्वास्थ्य संबंधी बीमारियों से बचाव

–डॉ विवेकानन्द यादव

मई का महीना वर्ष के सबसे गर्म महीनों में से एक माना जाता है। इस समय तेज धूप, गर्म हवाएँ और बढ़ता तापमान लोगों के स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालते हैं। विशेष रूप से बच्चे, बुजुर्ग और कमजोर प्रतिरोधक क्षमता वाले लोग अनेक बीमारियों की चपेट में जल्दी आ जाते हैं। गर्मी के कारण शरीर में पानी की कमी, थकान, चक्कर आना, लू लगना, पेट संबंधी संक्रमण तथा त्वचा की समस्याएँ सामान्य रूप से देखने को मिलती हैं। इसलिए मई माह में स्वास्थ्य के प्रति विशेष सावधानी बरतना अत्यंत आवश्यक है।

गर्मी के मौसम में सबसे अधिक खतरा लू लगने का होता है। जब शरीर अधिक तापमान को सहन नहीं कर पाता, तब व्यक्ति को तेज बुखार, सिरदर्द, कमजोरी और बेहोशी जैसी समस्याएँ हो सकती हैं। इससे बचने के लिए दोपहर के समय अनावश्यक रूप से बाहर निकलने से बचना चाहिए। यदि बाहर जाना आवश्यक हो तो सिर को कपड़े या टोपी से ढकना चाहिए तथा हल्के और सूती कपड़े पहनने चाहिए। मई महीने में शरीर में पानी की कमी होना भी एक बड़ी समस्या है। अधिक पसीना निकलने के कारण शरीर से जल और आवश्यक लवण बाहर निकल जाते हैं। इसलिए दिनभर पर्याप्त मात्रा में पानी पीना चाहिए। नींबू पानी, नारियल पानी, छाछ और फलों का रस शरीर को ठंडक प्रदान करते हैं तथा ऊर्जा बनाए रखते हैं। अत्यधिक ठंडे पेय पदार्थों और बाहर मिलने वाले अस्वच्छ शर्बत से बचना चाहिए।

गर्मी में खान–पान का विशेष ध्यान रखना चाहिए। बासी और खुले में रखे खाद्य पदार्थ जल्दी खराब हो जाते हैं, जिससे पेट दर्द, दस्त और उल्टी जैसी बीमारियाँ हो सकती हैं। इसलिए हमेशा ताजा और स्वच्छ भोजन करना चाहिए। फल और सब्जियों को अच्छी तरह धोकर ही उपयोग में लाना चाहिए। अधिक तला–भुना और मसालेदार भोजन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है।

इस मौसम में स्वच्छता का भी विशेष महत्व होता है। नियमित स्नान करना, साफ कपड़े पहनना तथा घर के आसपास सफाई रखना आवश्यक है। गंदगी और जमा पानी मच्छरों को बढ़ावा देते हैं, जिससे डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए घर और आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखना चाहिए।

अंततः कहा जा सकता है कि मई माह में थोड़ी–सी सावधानी और सही दिनचर्या अपनाकर अनेक बीमारियों से बचा जा सकता है। संतुलित आहार, पर्याप्त पानी, स्वच्छता और धूप से बचाव अच्छे स्वास्थ्य की कुंजी हैं। यदि हम समय रहते स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें, तो गर्मी के मौसम को सुरक्षित और स्वस्थ तरीके से बिताया जा सकता है।

नहीं रहे रामचंद्र जी

आजीवन संघ का काम करने वाले कुल्हड़िया पंचायत के स्वयंसेवक और कोईलवर खंड के कार्यवाह रामचंद्र जी हम लोगों के बीच नहीं रहे। 1990 के दशक से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े। इस क्रम में पाञ्चजन्य देने के लिए घरों में जाने का काम करने लगे। प्रखंड के गांवों से लड़कों को वर्ग ले जाने का काम उत्साह से करते थे। बरहरा विधान सभा में वह साइकिल से घूम–घूम करके अपने देश अपने समाज के लिए आरएसएस का काम करते थे। इसी दौरान कई लोगों से इनकी भेंट हुई, जो आगे चलकर संघ के स्वयंसेवक बने। उनकी कोशिश होती थी कि सबको पाञ्चजन्य समय से मिले। आज अंतिम समय में बहुत लोग भले ही इनके बारे में नहीं जानते होंगे लेकिन जब यहां पर कोई संघ विचार परिवार का नामलेवा भी नहीं था तब भी रामचंद्र जी क्षेत्र में अलख जगाए हुए थे। वह हमेशा राष्ट्र और राष्ट्रीयता के प्रति उत्साह बढ़ाने वाले काम करते थे। चाहे वह राष्ट्र का लेकर काम हो या राम मंदिर का आंदोलन हो या किसी स्वयंसेवक के लिए सूचना हो वह गांव–गांव साइकिल से जाकर के यह काम करते थे। उन्हीं की देन है कि आज यह परिवार है या संगठन इस क्षेत्र में दिखाई देता है। उनके अतुल्य योगदान को कोटि–कोटि नमन।

स्मृति शेष चंद्रशेखर जी

पटना सिटी के संघ कार्यों में सदा अग्रणी रहनेवाले निष्ठावान स्वयंसेवक चंद्रशेखर जी अब नहीं रहे। पेशे से शिक्षक चंद्रशेखर जी की सड़क दुर्घटना में 18 मई को मृत्यु हो गई। स्वर्गीय चन्द्रशेखर जी पटना सिटी के मालसलामी थाना के नुरुदीनगंज निवासी थे। बाल्यकाल के स्वयंसेवक रहे चंद्रशेखर जी ने दो वर्षों तक झारखण्ड में प्रचारक के नाते कार्य भी किया था। झारखण्ड के कई कार्यकर्ता अभी भी इनके सतत संपर्क में रहते थे। झारखण्ड प्रांत के कार्यवाह राम बिलास केवट जी आपके शुभचिन्तक रहे। आप तृतीय वर्ष प्रशिक्षित कार्यकर्ता थे। संप्रति सरकारी मध्य विद्यालय, हीलालपुर जरुआ, हाजीपुर में वरिष्ठ शिक्षक के पद पर कार्यरत थे। आप योग,आसन एवम प्रायाणाम के अच्छे जानकार थे। चंद्रशेखर जी सामाजिक कार्य एवम पर्यावरण के प्रति रूची लेते थे।

अपमान बना ताकत
22 वर्ष की आयु में बना आईएएस अफसर

गोविंद ने अभावों को अपनी ताकत बनाया, जिसने समाज के तानों को अपने संकल्प की आग में झोंक दिया और देश की सबसे कठिन परीक्षा में इतिहास रच दिया। यह संघर्ष गाथा है उत्तर प्रदेश के वाराणसी के रहने वाले गोविंद जायसवाल की, जिन्होंने साल 2006 की संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में पहले ही प्रयास में 48वीं रैंक हासिल कर आईएएस बनने का गौरव प्राप्त किया। उनकी यह यात्रा आज देश के उन करोड़ों युवाओं के लिए सबसे बड़ी प्रेरणा है, जो गरीबी या अंग्रेजी न जानने को अपनी कमजोरी मान लेते हैं।

गरीबी में बीता बचपन और मां का साया उठना

गोविंद जायसवाल का बचपन बेहद तंगहाली और कठिन परिस्थितियों के बीच बीता। वाराणसी के अलईपुरा इलाके में उनका पांच लोगों का परिवार महज 10 बाई 12 की एक छोटी सी कोठरी में रहता था। उनके पिता नारायण एक पैर में गहरी चोट होने के बावजूद रिक्शा चलाकर किसी तरह घर का खर्च चलाते थे। गोविंद के जीवन में दुखों का पहाड़ तब टूटा, जब वे महज 7 वीं कक्षा में थे और उनकी मां का ब्रेन हेमरेज के कारण आकस्मिक निधन हो गया। मां के इलाज में जमा–पूंजी खर्च हो जाने से परिवार पूरी तरह कर्ज और भयंकर आर्थिक तंगी में डूब गया।

किशोर उम्र के उस अपमान ने जिंदगी बदल दी

गोविंद जब 11 साल के थे, तब वे अपने एक अमीर दोस्त के घर खेलने गए थे। वहां दोस्त के पिता ने जब यह जाना कि गोविंद के पिता रिक्शा चलाते हैं, तो उन्होंने गोविंद को बेहद खरी–खोटी सुनाई, उसका अपमान किया और घर से बाहर निकाल दिया। उस मासूम उम्र में गोविंद को यह बात समझ नहीं आई कि गरीबी के कारण ऐसा व्यवहार क्यों किया गया? जब उन्होंने एक बुजुर्ग से पूछा कि समाज में सबसे बड़ा और सम्मानजनक पद कौन सा होता है, तो उन्हें जवाब मिला–आईएएस अधिकारी। बस उसी दिन, उस 11 साल के बच्चे ने ठान लिया कि वह बड़ा होकर प्रशासनिक अधिकारी ही बनेगा। वह अपमान उनके जीवन का टर्निंग पॉइंट बन गया।

पिता का ऐतिहासिक त्याग

पड़ोसी और समाज के लोग अक्सर गोविंद और उनके पिता को ताने मारते थे कि पढ़ाई–लिखाई से क्या होगा, गोविंद को ऑटो रिक्शा चला लेना चाहिए और बहनों को दूसरों के घरों में बर्तन मांजने भेज देना चाहिए। लेकिन गोविंद चुपचाप मेहनत करते रहे। ग्रेजुएशन के बाद जब गोविंद ने सिविल सेवा की तैयारी की इच्छा जताई तो उनके दिव्यांग पिता ने अटूट विश्वास दिखाया। पिता ने अपने जीवन की आखिरी उम्मीद–अपनी जमीन का इकलौता टुकड़ा और अपने 14 रिक्शे बेच दिए, ताकि वे बेटे को पढ़ाई के लिए दिल्ली भेज सकें।

दिल्ली का संघर्षः ट्यूशन पढ़ाया और भूखे सोए

दिल्ली पहुंचने के बाद गोविंद जानते थे कि उनके पास असफल होने या दूसरे प्रयास का कोई विकल्प नहीं है। वहां तंग कमरों और बिजली की कटौती के बीच उन्होंने 18 से 20 घंटे पढ़ाई की। पैसे बचाने के लिए उन्होंने बच्चों को गणित की ट्यूशन पढ़ाई और कई बार एक वक्त का खाना तक छोड़ दिया और भूखे सोए। हिंदी माध्यम होने के कारण कुछ लोगों ने उनके चयन पर संदेह जताया, लेकिन गोविंद का मानना था कि भाषा कभी आपकी योग्यता की बाधा नहीं बन सकती, बशर्ते आपके भीतर आत्मविश्वास हो।

........तो मुझे भी रिक्शा ही चलाना पड़ता

साल 2006 में जब यूपीएससी का परिणाम आया, तो महज 22 साल की उम्र में गोविंद जायसवाल ने पहले ही प्रयास में 48वीं रैंक हासिल कर देश को चौंका दिया। जैसे ही परिणाम आया, पूरे बनारस में जश्न का माहौल था। गोविंद ने अपनी सफलता के बाद कहा था, ''अगर मैं यूपीएससी का रास्ता नहीं चुनता, तो मुझे भी रिक्शा ही चलाना पड़ता।'' अपनी पहली सैलरी मिलते ही गोविंद ने जो सबसे पहला काम किया, वह था–वर्षों से दर्द झेल रहे अपने पिता के पैरों का बेहतरीन और सही इलाज करवाना। (साभार : हिन्दुस्तान)

RNI No.-BIHHIN/2003/12538 Postal Reg:R-10/NP-39/Patna GPO/26-28

नारद जयंती कार्यक्रम

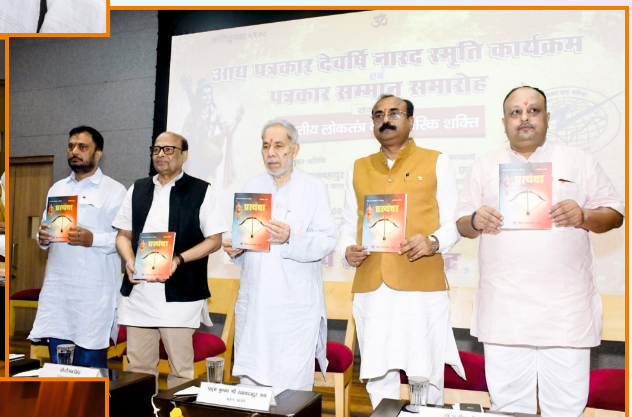

डाक टिकट

पता

पता- विश्व संवाद केंद्र, 104-105, सूर्या अपार्टमेंट, 10 वां तल, फ्रेजर रोड, पटना-800 001